

# पं. जवाहरलाल नेहरू की पुण्यतिथि पर "अहिंसा एवं युवा" विषय पर निबंध :-

## प्रस्तावना :-

पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में हुआ। उनके पिता मौलीबाल एक प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। उन्होंने कानून की शिक्षा ली। कानून पूरा करने के बाद वे भारत लौट आए। उन्हें अपने देश की आजादी के लिए एक ज्वलंत जुनून था। वे महात्मा गांधी से गहरे प्रभावित थे। उनकी सबसे बड़ी इच्छा भारत को आजाद कराने की थी। महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने सत्य व अहिंसा के मार्ग का भी पालन किया।

इन्होंने संविधान में कहा " हम इतिहास के पुरुष और महिला हैं या नहीं, भारत भाग्य का देश है"।

## अहिंसा और युवा :-

अहिंसा और युवा दो विरोधाभासी शब्द हैं। क्योंकि युवा गर्मजोरी और उबलते खून से भरा होता है, जो जरा-जरा सी बात पर उत्तेजित हो जाता है, और हिंसा पर उतारू हो जाता है। इसलिए युवा और अहिंसा दो विपरीत और विरोधाभासी अर्थ लिए हुए हैं। यह आवश्यकता नहीं सारे युवा हिंसक ही होते हैं।

किसी भी तरह की हिंसा किसी भी तरह से  
 उचित नहीं होती। अक्सर देखने में आता  
 है कि युवा लोग आक्रामक अधिक होते हैं,  
 उनमें जोश एवं उत्साह होता है। थोड़े से  
 किसी वाद-विवाद में होती सी बात पर  
 उत्तेजित हो जाते हैं और हिंसक बन जाते  
 हैं, क्योंकि उनके खून में उबाल होता है।  
 युवावस्था जोश का प्रतीक है। वह उत्साह  
 का प्रतीक है, क्रोध कर गुजरने की अवस्था  
 होती है। हिंसा के मायाजाल में उलझ  
 कर युवा अपने जीवन को गलत राह  
 पर ले जा सकते हैं। जोश व  
 उत्साह का तात्पर्य यह नहीं कि हिंसा  
 भी की जाए। हिंसा पर भी काबू  
 पाया जा सकता है। बेशर्त अगर अपने  
 मन को नियंत्रण में रखा जाए।  
 अपने क्रोध पर नियंत्रण स्थापित किया जाए।  
 अगर युवा बात-बात पर हिंसा करने की  
 बजाए अपने जोश व उत्साह तथा गर्मजोशी  
 को सकारात्मक कार्यों में लगाएँ तो वह  
 न केवल समाज के हित का कार्य करेंगे,  
 बल्कि स्वयं के हित का भी कार्य करेंगे।

## अहिंसा का महत्व :-

जो स्वतंत्रता प्राप्त की थी सन् 1947 में भारत ने  
 ही देन है। 'अहिंसा परमो धर्म' यह ही हम  
 सबने सुना है। जिसे गौतम बुद्ध से लेकर  
 महावीर स्वामी तक ने अपनाया, और इसी मार्ग  
 पर चलने का सबको संदेश दिया, परन्तु अहिंसा

के मार्ग पर चलना उतना ही मुश्किल था जितना कि अंगारों पर चलना, जिसे सच कर दिखाया, हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने रुक लाठी लेकर खड़ाऊ पहनकर वे निकल गये अपने देश को अंग्रेजों से आजाद कराने और भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया, सिर्फ और सिर्फ अपनी अहिंसावादी विचारधारा के चलते, महात्मा गांधी को अहिंसावादी विचारधारा का जनक कहा जाता है। अपनी इस विचारधारा से उन्होंने सिर्फ अपना देश आजाद कराया अपितु अन्य देशों के समक्ष यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि अहिंसा रुक ऐसा शांतिपूर्ण दायिदार है, जिसके माध्यम से हिंसा पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है।

भारत में और कई रुसे विचारक रुबे सुधार कर रहे हुए, जिन्होंने अहिंसावादी विचारधारा का प्रचार किया, जिनमें राजा राम मोहन राय, इश्वरचन्द्र विद्या सागर, स्वामी विवेकानन्द जैसे नाम विश्व प्रसिद्ध हैं।

## • युवा :-

युवा काल की आशा है, वे राष्ट्र के सबसे ऊँचा भाग में से रुक हैं। इसलिए उनसे बहुत उम्मीद है। सही मानसिकता व क्षमता के साथ युवा राष्ट्र के विकास में योगदान कर सकते हैं। और देश को भागे बढ़ा सकते हैं !

## आज का युवा :-

मानव सभ्यता सदियों से विकसित हुई है, हर पीढ़ी की अपनी सोच और विचार होते हैं जो समाज की विकास की दिशा में योगदान देते हैं। हालांकि एक तरफ मानव मन और बुद्धि समय गुजरने के साथ-साथ काफी विकसित हो गई है, वहीं लोग भी काफी बेसब्र हो गये हैं, आज का युवा परिभाषक क्षमता वाला है, लेकिन इसे भी आवेगी और बेसब्र कहा जा सकता है, आज का युवा सीखने व नई चीजों को बलाशने के लिए उत्सुक है। अब जब वे अपने बड़ों से सलाह ले सकते हैं, तो वे हर कदम पर उनके द्वारा निर्देशित नहीं होना चाहते हैं। युवा पीढ़ी आज विभिन्न चीजों को पूरा करने की जल्दबाजी में है। और अंत में परिणाम प्राप्त करने की दिशा में इतना मग्न हो जाता है कि उन्होंने इसका चयन किस लिए किया। इसकी ओर भी वे ध्यान नहीं देते हैं, हालांकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित, वास्तुकला, इंजीनियरींग और अन्य क्षेत्रों में बहुत प्रगति हुई है। पर हम इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकते कि अपराध की दर में भी समय के साथ काफी वृद्धि हुई है। आज दुनिया में पहले से ज्यादा हिंसा हो रही है और इस हिंसा के एक प्रमुख हिस्से के लिए युवा जिम्मेदार हैं।

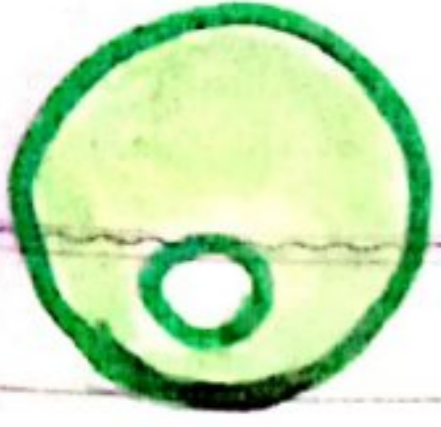
★ युवाओं के बीच अपराध को बढ़ावा देने वाले कारक :-

- (i.) शिक्षा की कमी
- (ii.) बेरोजगारी
- (iii.) पावर प्ले
- (iv.) बढ़ती प्रतिस्पर्धा
- (v.) अन्य

यह माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों का पोषण करें व उन्हें अच्छा इंसान बनने में मदद करें। देश के युवाओं के निर्माण में शिक्षक भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ईमानदार और प्रतिबद्ध व्याप्तियों को पोषित करके वे एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं।

## • उपसंहार :-

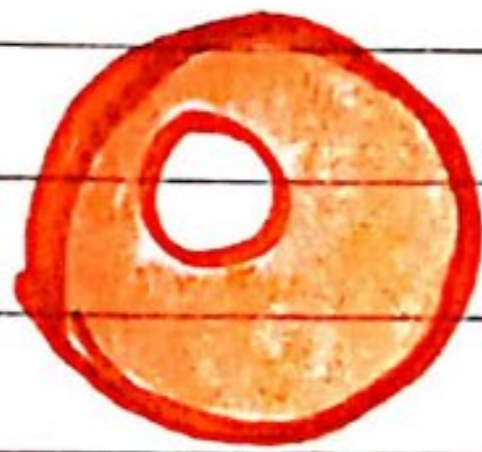
लोगों के अन्दर अब संवेदनारं पूर्णतया समाप्त होती जा रही हैं जरूरत हैं तो स्वयं को समझने की ब्यौंकि हिंसा के रास्ते पर चलकर किसी का भला नहीं हुआ है बड़े बड़े देश तबाह हो गये हैं और हो रहे हैं। यदि हम अपने जीवन में अहिंसावाद को अपनाते हैं, तब हम सही मायने में स्वयं को जीव-जन्तुओं से भिन्न मानते हुए मानवता की रक्षा कर सकते हैं।



कुछ पांक्तियों से मैं इस निबंध को समाप्त करना चाहूंगी :-



" जब जुल्मों का हो सामना  
तब तू ही हमें थामना  
वो धराई करे हम भलाई करे  
नहीं बदले की हो कामना  
बढ़ उठे प्यार का हर कदम  
और मिते बैर का ये भरम  
नौकी पर चलें और बदी से टलें



ताकि हँसते हँसते निकले दम  
ये मालिक तेरे बन्दे हम "

- अनिषा हाड़ा

B.A. I<sup>st</sup> Year